बीज रूप में मौजूद होता है।आज्ञाचक्र से लगा एक आज्ञाचक्र मण्डल होता है।जो आज्ञाचक्र का ही अंग होता है। जब व्यक्ति किसी विषय का निर्णय लेना चाहता है तो शरीर के अन्दर की कोशिकायें मतदान करती है। ये कोशिकायें गुणात्मक ऊर्जा की होती है जिस गुण की ऊर्जा सबसे अधिक होती है, वही आज्ञामण्डल आज्ञा चक्र को प्रेरित करता है और आज्ञाचक्र वही निर्णय लेता है। इसके बाद उसी गुण की इच्छा पैदा होती है जिस पर विचार चलने लगता है ।जो भाव में परिवर्तित हो जाता है और व्यक्ति उसी कार्य को करने लगता है। इस क्रिया से शरीर में रासायनिक परिवर्तन होने लगता है जो एहसास के रूप में व्यक्त होता है और उसी गुण का पदार्थ बनता है। जिससे कोशिका का निर्माण होता है। उसी गुण की ऊर्जा शरीर से निकने लगाती है जो प्रकृति निर्माण का कार्यकरी है। जो प्रकृति निर्माण में कार्य करती है । इस ऊर्जा के फैलाव के लिए लिखने या बोलने की जरूरत नहीं होती है। यह तो एक ऊर्जा विज्ञान है जो अपना कार्य पूरा करता है। लिखना बोलना तो दूसरों को मार्ग दिखाने के लिए है पर ऊर्जा स्वतः निकलती रहती है। यह किसी के बस में नहीं जो कोई रोक लें। इसे विरोधी ऊर्जा घेरने का प्रयास करती है पर रूकावट से इसकी ऊर्जा केन्द्रित होती रहती है। जो और ताकतवर बनकर अपने उद्देश्य को पूरा करती है। मन प्रकाश है जो तीसरी ऑख के लिए कार्य करता है। जो व्यक्ति की इच्छा से प्रभावित होता है।व्यक्ति जो सोचता है। मन वहॉ पहुँच जाता है।जो देखता है उसकी सूक्ष्मता तीसरी ऑख पर आ जाती है। जो व्यक्ति के हित में होता है। वही निर्णय आज्ञाचक्र लेता है और उसी तरह की इच्छा पैदा होने लगती है।'कान' आवाज को सुनता है। जिससे शरीर अपना बचाव करता है पर सुनी गयी आवाज झूठी भी हो सकती है।ऐसी स्थिति में मन उसकी सूक्ष्मता से सच को निकालता है। जो तीसरी ऑख स्पष्ट कर आज्ञाचक्र को प्रेसित कर देती है और व्यक्ति के हित में निर्णय आ जाता है। जिससे व्यक्ति एक झूठे व्यवधान से बाहर निकल जाता है। 'नाक' सुगन्ध से सही और गलत स्थान का पहचान देती है। जिसके बाद आज्ञाचक्र निर्णय लेता है। मुँह जिसमें जिह्वा स्वाद से भोजन सही गलत को बताती है। उसके बाद व्यक्ति उसे धारण करता है। जिससे शरीर का निर्माण होता है पर व्यक्ति कभी-कभी लालच में(जो राक्षसी प्रवृति से प्रभावित होता है)जिह्वा की नहीं सुनता और उसे ग्रहण कर लेता है। ऐसे में रूकावट डालने का काम तीसरी ऑख करती है।फिर भी राक्षसी प्रवृति की कोशिश ज्यादा होने पर व्यक्ति धारण कर लेता है। तो आत्मा उस पदार्थ को बाहर निकालकर जीवन की रक्षा करती है।पाचनतंत्र भोजन से आवश्यकता की चीजे निकालकर पदार्थ को मलमूत्र के रूप में बाहर कर देता है।इस क्रिया में जो रासायनिक परिवर्तन होता है।वह लार के रूप में जिह्वा पर बनता है उसी से शरीर का निर्माण होता है।जिसे दिल शरीर के चारो तरफ पहुँचाता है। यह क्रिया आत्मिक रचना के बीजरूप की गुणात्मकता से होती है। जो बीज का गुण है पर इस पर चलते हुए व्यक्ति अपने जीवन का एक नया निर्माण कर सकता है। जो ज्ञान दृष्टि से सकारात्मक सोच बनाने से पूरा हो सकता है।

मानव राक्षसी प्रवृति और ईश्वरी प्रवृति से प्रभावित रहता है।जब राक्षसी से प्रभावित होता है तो अहंकार का जन्म होता है।जिससे नकारात्मक सोच बढ़ने लगती है और राक्षसी प्रवृति की कोशिकायें बढ़ने लगती है। परिणाम स्वरूप आज्ञाचक्र मण्डल मे इसका मतदान बढ़ने लगता है। व्यक्ति हर विषय का निर्णय विखण्डित करने के लिए लेने लगता है। धीरे-धीरे उसकी सभी कोशिकायें राक्षसी प्रवृति की हो जाती है। ऐसा होने पर व्यक्ति पूर्ण राक्षस हो जाता है। उसकी सोच नकारात्मक हो जाती है जो लोगो के जीवन में व्यवधान पहुँचाने लगती है। जिसस प्रकृति का नुकसान होता है।ऐसे व्यक्ति मानव शरीर में होते हुए सिर्फ विखण्डन का कार्य करने लगते है। ऐसे लोगों के शरीर का पदार्थ भी इसी गुण का हो जाता है। इसी तरह का गुण ऊर्जा रूप में छोड़ने लगते है और शरीर छूटने के बाद मिट्टी में भी वही गुण बना रह जाता है। जो उसी गुण का जीव निर्माण करने में सहायक होता है। जब राक्षसी प्रवृति और ईश्वरी प्रवृति दोनों बराबर हो जाती है। तो ईश्वरीय प्रवृति ज्यादा प्रभावित करने लगती है और व्यक्ति मानव श्रेणी में आ जाता है। ऐसा होने पर व्यक्ति के अन्दर मानवता का जन्म होता है। वह ज्यादातर सही निर्णय लेने लगता है। कोशिकायें मतदान करती है तो आज्ञाचक्र मण्डल ज्यादातर सही दिशा का निर्णय देता है। व्यक्ति के अन्दर दूसरों का सहयोग करने का भाव बनने लगता है। उसके अन्दर से मानवता की सुगन्ध निकलने लगती है। जो अपने गुण को बढ़ने का कार्य करने लगती है। उसकी मानवता से व्यक्ति की पहचान प्रकृति में मानव रूप में होती है। जब व्यक्ति ईश्वरी प्रवृति से ज्यादा प्रभावित होता है तो उसके अन्दर ईश्वरी प्रवृति की कोशिकायें ज्यादा बनने लगती है। जिससे वह सकारात्मक सोच की तरफ बढ़ने लगता है और उसके अन्दर से ईश्वरी प्रवृति की सुगन्ध निकलने लगती है।जो निर्माण का कार्य करती है।ऐसा व्यक्ति ईश्वरीय प्रवृति का नेतृत्व करने लगता है।जब उसके अन्दर पूर्ण सकारात्मक सोच आ जाती है।तो वह पूरी प्रकृति का कार्य करने की जमीन बन जाता है और उसके अन्दर से न्याय और निर्माण की सुगन्ध निकलने लगती है। जब उसके अन्दर सिर्फ सकारात्मक सोच हो जाती है। तो उसके अन्दर की काशिकायें ईश्वरीय प्रवृति की हो जाती है। आज्ञाचक्र मण्डल में मतदान सिर्फ ईश्वरीय प्रकृति का होने लगता है। ऐसा होने पर वह पूर्ण ईश्वर के दर्जे में आ जाता है। जहॉ सिर्फ दया भाव बनता है। दया भाव बनने से वह सिर्फ निर्माण करता है। इसी तरह 'क्षेत्रीय देवता' या कुल देवता का निर्माण होता है जो प्रकृति द्वारा क्षेत्र विशेष के लिए न्याय और निर्माण का कार्य करते है।समाज उनकी पूजा करता है।ईश्वर एक सुगन्ध है, प्रकाश है, निर्माण है, न्याय है जो अपनी प्रवृति की मिट्टी में रहता है। मानव अपनी ज्ञान दृष्टि सकारात्मक सोच धारण करके अपने शरीर को ईश्वरीय प्रवृति की मिट्टी बना सकता है। ऐसा करने से ईश्वरीय ऊर्जा उसके अन्दर से कार्य करने लगती है। उसके अन्दर की सभी कोशिकायें ईश्वरीय प्रवृति की हो जाती है। ऐसा होने से आज्ञाचक्र मण्डल सिर्फ न्याय और निर्माण का निर्णय देता है। इस तरह का शरीर ईश्वर का घर बन जाता है। जो ईश्वरीय नेतृत्व करने लगता है। शारीरिक क्षमतानुसार प्रकृति उनके क्षेत्र का निर्धारण कर देती है। ऐसे शरीर में कार्य ईश्वर करता है पर क्षेय उस व्यक्ति को मिलता है। जिसे ईश्वरीय नेतृत्व मिल जाता है । उसके अन्दर से निकलने वाली सुगन्ध न्याय करती है। जिससे निर्माण होता है। ऐसे बदलाव होता जाता है तो उसकी सुगन्ध प्रकृति में जमा होती रहती है। जिसमें से उस व्यक्ति के हक में भी ब्याज रूप का हिस्सा जुड़ता जाता है। जिसके कारण यह बदलाव होता है। खुद के द्वारा छोड़ी गयी सुगन्धात्मक ऊर्जा और ब्याज का हिस्सा प्रकृति में उसके नाम जमा होता रहता है। जो उसके नये जीवन में नेतृत्व का क्षेत्रफल बढ़ाता रहता है। ईश्वर स्वरूप का नेतृत्व गॉव से ब्लाक, ब्लाक से तहसील, तहसील से जिला, जिला से प्रान्त, प्रान्त से देश का श्रेय प्राप्त करता है। अभी तक इस प्रणाली का विकास यहीं तक हुआ है। कुछ ईश्वर नेतृत्व कई देशों तक पहुँचा है पर पूरे विश्व का ईश्वर अभी तक कोई नहीं हुआ है। अब वह समय आ गया है। जिसमें पूरे विश्व का एक ईश्वर होगा। जो अपने प्रकाश से विश्व को सुगन्धित करेगा। मानव उसके बताये मार्ग पर चलेगा। उसकी सुगन्ध से विश्व में न्याय होगा। आप सब लोग भी सकारात्मक सोच धारण कर ईश्वरीय प्रवृति धारण करने योग्य अपनी जमीन बनाये और क्षत्र विशेश में उसका नेतृत्व धारण करे। इसी शुभकामना के साथ।